PUNE RESEARCH TIMES (ISSN 2456-0960)
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES SPECIAL ISSUE OCT 2018

हिंदी की महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श

डॉ. ज्ञानेश्वर महाजन
सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख
स्वामी विवेकानंद वरिष्ठ महाविद्यालय, मंठा
जि. जालना **महाराष्ट्र भारत**

प्रस्तावना :

स्वतंत्रता के बाद पाँचवे दशक से हिंदी की इन महिला उपन्यासकारों ने जैसे रजनी पन्नीकर, कंचनलता सब्बरवाला, चंद्रकिरण सोनरक्सा और कांति वर्मा आदि लेखिकाएँ लिख रही थी। इनके साहित्य में परम्परागत तथा आधुनिक मूल्यों की टकराहट को प्रस्तुत किया गया। सन् – 1960 के बाद स्वतंत्र भारत की प्रथम उच्च शिक्षित पीढी की कामकाजी महिला लेखिकाओं ने समसामयिकता से जुडी नारी की सभी समस्याओं को खुलकर साहित्य में रेखांकित किया। इस वर्ग में मुख्यतः कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियम्वदा, मालती जोशी, दीप्ति खंडेलवाल, शशिप्रभा शास्त्री, मेहरून्निसा परवेज, सुधा अरोरा, सिम्मी हर्षिता, ममता कालिया, निरूपमा सेवती, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे, मणिका मोहिनी, सूर्यबाला, प्रतिमा वर्मा, नासिरा शर्मा, चित्रा मुदगल, नमिता सिंह, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, मंजुल भगत, सुनीता जैन, बीना सक्सेना, उमा बरूआ आदि महिला उपन्यासकारों ने हिंदी के उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया।

आधुनिक गद्य साहित्य में कई आंदोलन आए जैसे – नई कहानी (राजेंद्र यादव), सचेत कहानी (डॉ. महीप सिंह), सहज कहानी (अमृत राय), समकालीन कहानी (गंगा प्रसाद विमल), अकहानी (जगदीश चतुर्वेदी), समांतर कहानी (कमलेश्वर) तथा सक्रिय कहानी (राकेश वत्स) आदि। इन आंदोलनों में महिला लेखिकाओं का योगदान भरपूर रहा है।

विशेषतः स्वाधीनता के उपरान्त महिला लेखिकाओं ने कहानी तथा उपन्यास के माध्यम से अपने जगत् की सभी समस्याओं को वास्तविक रूपसे अपने साहित्य में प्रस्तुत किया। स्वाधीनता आंदोलन के समय में भी बंग महिला (राजेंद्र बालाघोष), सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा तथा उषादेवी मित्रा इन महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य में राष्ट्रीय भावनाएँ, आदर्श और यथार्थ तथा नारी हृदय की कोमलता को भी उद्घाटित किया।

इन लेखिकाओं ने पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, प्रशासनिक आदि क्षेत्रों में नारी की हिस्सेदारी, अधिकार हनन, यौन शोषण, प्रेम–भंग, शारीरिक तथा मानसिक उत्पीडन आदि कुप्रवृत्तियों तथा घटनाओं के खिलाफ अपनी रचनाओं के माध्यम से आवाज उठाई है। इन लेखिकाओं के उपन्यासों में आगत पात्र, घटना तथा वातावरण के नारी के शब्दों में उजागर किया गया है। इस प्रकार उपर्युक्त लेखिकाओं के उपन्यासों में आगत पात्रों की समझ तथा परिस्थितियों को इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है–

कृश्णा सोबत – ने 'डार से बिछुडी' उपन्यास में अंतर्जातीय विवाह तथा विधवा अवस्था से त्रस्त माँ–बेटी की व्यथा को दर्शाया है। 'मित्रो–मरजानी' इस उपन्यास में नायिका मित्रो अतृप्त वासना से ग्रसित है। ''सूरज मुखी अंधेरे के'' इस उपन्यास में बलात्कार से पीडित स्त्री की जीवन कहानी को उद्घाटित किया गया है। ''यारों के यार तिन पहाड'' इस उपन्यास में कृष्णा सोबती ने दफ्तरी माहौल का जिक्र किया है। दफ्तरों में चलने वाले लेन–देन, कमीशन जैसे काले धन्धों को उजागर किया है।

मन्नू भंडारी – का ''आपका बंटी'' उपन्यास में उच्चशिक्षित महिला अपने अहम्–भाव की शिकार है। शकुन अपने परिवार की अपेक्षा खुद को अलग मानती है। पति से संबंध–विच्छेद करके बेटे बंटी को माँ–बाप होते हुए अनाथ कर बैठती है। क्योंकि बंटी को अपनी माँ का डॉ.जोशी के साथ पुनर्विवाह स्वीकार नहीं है। वह अपने आपको असुरक्षित अनुभव करता है। मन्नू जी का यह उपन्यास विवाह, संबंध–विच्छेद तथा पुनर्विवाह की कई समस्याओं को उद्घाटित करता है। ''महाभोज'' उपन्यास में भले ही सामाजिक भेदाभेद तथा राजनैतिक छलकपट का तर्क–वितर्क हो। लेकिन इस उपन्यास में आगत एक मात्र नारी पात्र 'रक्मा' दलित वर्ग की स्त्री का शोषण तथा अत्याचार से जुडी समस्याओं का प्रातिनिधिक स्त्री पात्र है। ''स्वामी'' उपन्यास में नायिका मिनी अपने प्रेमी नरेंद्र और पति घनश्याम में बँट चुकी है। वह नरेंद्र के साथ भागने का मन बनाती है, लेकिन पति घनश्याम की उदारता तथा सरल बर्ताव उसे भागने से रोक लेता है।

मालती जोशी – ने ''सहचारिणी'' उपन्यास में वैवाहिक जीवन से जुडे सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रसंगों को उद्घाटित किया है। जीजा के साथ साली के अंतरंग संबंध, इस विषय को मालती जोशी प्रमुखता के साथ उजागर करती है। उनका ''पाषाण युग'' उपन्यास का कथानक भी इसी विषय को उद्घाटित करता है। इस प्रकार संतान तथा अन्य रिश्तेदार ऐसे संबंधों को लेकर कहीं नाराज, तो कहीं विद्रोह की भूमिकाओं से गुजरते हैं, मालती जोशी ने वैवाहिक जीवन का चित्रण अपने उपन्यासों में बडी कुशलता के साथ किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री – का ''बात एक औरत की'' इस उपन्यास में पति अपनी पत्नी को अपने मतानुसार कभी परंपरागत पत्नी के रूप में देखना चाहता है, तो कभी आधुनिक पत्नी के रूप में। इस उपन्यास में आगत पति एक आत्मग्राही पुरूष है, जो अपनी पत्नी को अपनी इच्छाओं के नुसार उसे रहने की हिदायत देता है तथा अपना हित मात्र उससे वसूल करता है। पत्नी के अस्तित्व तथा व्यक्तित्व से उसे कोई लेना–देना नहीं है। ''कुमारिकाएँ'' इस उपन्यास में कुँवारी बेटियों की त्रासदी को प्रस्तुत किया गया है। अतः कृष्णा अग्निहोत्री ने नारी की समस्त समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास अपने उपन्यासों में किया है।

उमा बरूआ – का उपन्यास ''सियन नदी की लहरें'' मे नायक एकाकीपन की अवस्था से गुजरता है। वह अपने जीवन में किसी भी स्त्री के साथ घर नहीं बसा पाता है। अतं में वह साधु बन जाता है।

निरूपमा सेवती – ने ''पतझड की आवाजें'' इस उपन्यास में स्त्री का नौकरी करना और घर बंसाना इतना आसान नहीं है। इस तथ्य की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है। ''दहकन के पार'' उपन्यास में जाति तथा धर्म को न मानने वाली युवती की व्यथा है। इस उपन्यास में तुषार नामक हिंदू लडकी मुस्लीम लडके से शादी करना चाहती है। लेकिन उनकी शादी नहीं हो पाती है। इसी बीच वह गर्भवती हो जाती है, वह अपने बच्चे के खातिर धर्म, जाति आदि को भूलकर केवल मानवीयता के लिए अपने बच्चे को जन्म देकर उसे पालती–पोसती है, और जिसका बच्चा है, उसी के धर्म में परिवर्तित हो जाती है।

दीप्ति खंडेलवाल – ने ''प्रतिध्वनियाँ'' उपन्यास में चंचल मनोवृत्तियों से ग्रसित नर–नारी की मानसिकताओं को उद्घाटित किया है। और इस वास्तविकता को रेखांकित किया है, कि मनुष्य अगर अपने वैवाहिक जीवन से तथा पत्नी से संतुष्ट नहीं है तो वह

एक अपराधी मात्र बनकर साबित होता है। इस उपन्यास का नायक नीलकांत का चरित्र भी ठिक इसी प्रकार का है।

बीना सक्सेना – ने भी ''सौगंध'' इस उपन्यास में एक भटके हुए प्रेमी का चित्रण किया है। प्रकाश शादी–शुदा होकर भी कई स्त्रियों के साथ शरीर–संबंध स्थापित करता है। इसी कारण वह भटकन भरी जिंदगी से गुजरता रहता है।

सुनीता जैन – ने ''अनुगुंज'' इस उपन्यास में पति–पत्नी के संबंधों को प्रथम वस्तु के रूप में रेखांकित किया है। और नर–नारी के संबंधों को दूसरी वस्तु के रूप में मान्यता दी है। वैवाहिक जीवन में परस्पर विश्वास और एकात्म भाव पति–पत्नी कहलाता है और अविश्वास तथा एकात्म का अभाव केवल नर–नारी तक सीमित कर देता है।

भाशिप्रभा भाास्त्री – ने ''सीढियाँ'' इस उपन्यास में नारी के अंतर्द्वंव्द तथा टूटते व्यक्तित्व को उजागर किया है। मनीषी विवाह के तुरंत बाद विधवा हो जाती है। और अंत तक विधवा ही रहती है। ''क्योंकि'' उपन्यास में नौकरी पेशा पति–पत्नी नकली जेवर के शिकार होते है। ''कर्क रेखा'' उपन्यास में नारी–पुरूष के संबंधो की वास्तविकता को उजागर किया गया है । इस उपन्यास की नायिका पति के मंद व्यवहार से अपने आपको एकाकी अनुभव करती है।

उशा प्रियम्वदा – ''पचपन खंभे लाल दीवारे'' इस उपन्यास की नायिका सुषमा को अपने जीवन में आए एकाकीपन की अनुभूति व्यथित करती है। वह दायित्व के कारण अपनी व्यक्तिगत भावनाओं तथा इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाती है। वह प्रेमी नील को अपने जीवन से अलग कर देती है। ''रूकोगी नहीं राधिका'' इस उपन्यास की नायिका राधिका एकाकी जीवन जीने की कुंठा से कभी किसीसे जुड नहीं पाती और अंत तक अकेलेपन की स्थिति से जीवन–यापन करती है। वह न तो पिता के पास बेटी बनकर रूक पाती है, न पत्नी बनकर अपने तीनों मित्रों में से किसी एक के पास रह पाती है। ''शेष यात्रा'' उपन्यास में विवाह–पुनर्विवाह के अनुभव को नायिका अनु अभिव्यक्त करती है और आत्मनिर्भर होकर जीवन व्यतीत करती है।

ममता कालिया – ने ''बेघर'' इस उपन्यास में कुँवारेपन की स्थिति को उद्घाटित किया है। उपन्यास का नायक परमजीत यह मानकर अपनी पत्नी संजीवनी को तलाक देता है कि वह संजीवनी के जीवन में प्रथम पुरूष के रूप में नहीं आया है। शादी के पहले संजीवनी के जीवन में कोई पुरूष जरूर आया है। यह भूत परमजीत पर सँवार हो जाता है

और रमा नामक फूहड महिला से दूसरा विवाह कर बैठता है। वह रमा के विचित्र बर्ताव से भी परेशान है। अतः अपने आपको परमजीत बेघर महसूस करता है।

मंजुल भगत – का ''अनारो'' उपन्यास की नायिका अनारो पति के प्रति प्रगाढ श्रध्दा और अपने प्रति स्वाभिमान का भाव उसे अबला से सबला बना देते हैं। वह पलायन की अपेक्षा संघर्ष को अपनाती है। ''टूटा हुआ इंद्रधनुष'' इस उपन्यास में नायिका शोभना पति की अपेक्षा प्रेमी को समर्पित है। शोभना का इस प्रकार का व्यवहार पति स्वीकार कर लेता है।

मृदुला गर्ग – ने ''वंशज'' उपन्यास में पिता तथा पुत्र की टकराहट को उजागर किया है। पिता पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है तथा पुत्र भारतीय संस्कृति का कायल है। ''चितकोबरा'' उपन्यास में नायिका मिसेज मनु गोयल अपने पति की अपेक्षा लंदन के पादरी रिचर्ड को एक सही पुरूष के रूप में मानती है। वे दोनों इस जन्म में नहीं ; परंतु अगले जन्म में अवश्य जीवन–साथी बनने की इच्छा रखते हैं। उनका दोनों का पुनर्जन्म पर भरोसा है।

मेहरून्निसा परवेज – का उपन्यास ''उसका घर'' में आगत दो नारी पात्र ऐलमा और रेशमा अपने अपने धरातल पर जीवन–यापन कर रही हैं, इसमें ऐलमा कमजोर तथा डरपोक है लेकिन रेशमा को सामाजिक नैतिकता से कोई लेना–देना नहीं है। वह कुँवारी माँ है। अपने मता नुसार शादी भी करना चाहती है। ''कोरजा'' इस उपन्यास में मुस्लिम जीवन तथा संस्कृति को दर्शाया गया है। नर–नारी के संबंधों की भी गहन चर्चा इस उपन्यास में की गई है।

इस प्रकार हिंदी महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों का लेखन किया है। इन उपन्यासों में स्त्री विमर्श को विशेष रूप से अभिव्यक्त किया गया है। क्योंकि स्त्री की मानसिकता स्त्री ही समझ सकती है। अतः इस विमर्श के अंतर्गत सहानुभूति की अपेक्षा स्वानुभूति को अधिक गहराई से अभिव्यक्ति दी गयी है। अतः इस महिला उपन्यासकारों के लेखन की कुछ विशेषताएँ परिलक्षित होती है –

1. प्रजातंत्र में व्याप्त सामंती सभ्यता का स्त्री द्वारा विखंडन।
2. अवसरवादी मनोवृति का विरोध।
3. व्यक्ति हित के साथ–साथ सामाजिक हित का पालन।
4. कामाकाजी नारी के दोहरे दायित्व की समस्याओं का उपाय ।

5. मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग में व्याप्त आर्थिक समस्याओं का निराकरण।
6. विवाह पूर्व तथा विवाह बाह्य संबंधों का परिमार्जन।
7. परम्परागत बोध तथा आधुनिक बोध में समन्व।
8. दाम्पत्य जीवन में व्याप्त यौन समस्याओं का समाधान।
9. संबंध–विच्छेद के दुष्परिणाम तथा पुनर्विवाह की समस्याओं का समाधान।
10. शिक्षित स्त्री पक्ष का पुरूष व्दारा स्वीकार व समर्थन का सकारात्मक दृष्टिकोण।
11. नारी सबलता और संघटन का उद्घाटन।

निष्कर्षतः

हिंदी महिला उपन्यासकारों का लेखन स्त्री जगत को प्रेरित करता है तथा स्त्री को अपनी सत्ता और अस्तित्व के साथ–साथ पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्व को लेकर एक रचनात्मक दृष्टि प्रदान करता है। अतः उपर्युक्त लेखिकाओं ने समाज को नारी के प्रति सरोकार स्थापित करने की दृष्टि जरूर दी है।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
2. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
3. वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और
   दाम्पत्य जीवन(विश्लेषण तथा आकलन) – डॉ. साधना अग्रवाल